thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

युग प्रवर्तक ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

"नारी न केवल गृहस्थ जीवन की अपितु मानव–समाज की आधार शिला है अतः उसका सुशिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत होना अनिवार्य है। जिस गृहाश्रम में धार्मिक, विद्वान् और प्रशंसायुक्त पंडित स्त्री होती है वहां दुष्ट काम नहीं होते। वे ही स्त्रियां धन्य हैं जो अपनी संतानों को विद्या और सुन्दर शिक्षायुक्त करने व कराने का निरंतर प्रयत्न करती हैं।"

'निज स्वामियों के कार्यों में समभाग जो लेती न वे,
अनुराग पूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे।
तो फिर कहाती किस तरह अर्धांगिनी सुकुमारियाँ,
तात्पर्य यह अनुरूप ही थी नरवरों की नारियाँ।।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य वन्दना कोष से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज बिलासपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६०वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ फरवरी २०१५

thearyasamaj.org

तमसो मा ज्योतिर्गमय

♦सुरेन्द्र आर्य, आर्य समाज नादौन, जिला हमीरपुर (हि. प्र.)

अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करके हमें प्रकाश का दान दो जिससे सच्चे जीवन लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें। हम चारों ओर से अज्ञान में घिरे हुए हैं। ऐसे में काम, क्रोध, लोभ, मोह, स्वार्थ आदि हमारी आत्मा को पतन के गर्त में गिराने में लगे रहते हैं। न तो हम अपना भला कर पाते हैं न ही संसार का ही।

भगवान ने हमारे पिछले जन्म के पुण्य कर्मों के फलस्वरूप हमें ये मनुष्य शरीर दिया है। ये शरीर इसलिए दिया कि प्रभु ने जो ये संसार रूपी सुन्दर बाग सजाया है, हम माली के समान उसे और अधिक संवार सकें। परन्तु हम अज्ञानवश उसे देखना भी नहीं चाहते और अपने नीच व निकृष्ट स्वार्थों की पूर्ति में ही लगे रहते हैं। हर समय लोभ, मोह व काम की पूर्ति करने के ताने–वाने बुनते रहते हैं। अगर इसमें रूकावट आ जाए तो क्रोधित हो उठते हैं।

पुत्रैषणा, लोकेषणा और वित्तेषणा के अतिरिक्त हमें कुछ दिखाई देता नहीं। संसार में जो कुछ भी है हमें मिल जावे। दूसरे भूखे मरते रहें हमें कोई चिंता नहीं होती। स्वार्थपूर्ति के लिए हम अंधे हो जाते हैं। अपने चारों ओर ऊंची–ऊंची दीवारें खड़ी कर लेते हैं कि परमात्मा का दिव्य प्रकाश हमारे पास तक पहुंच नहीं पाता।

हमें दिव्य प्रकाश की आवश्यकता है जिससे हम अपनी आत्मा को पहचान सकें और आत्मा व परमात्मा के मिलन का दिव्य आलोक चारों ओर फैला सकें।

अज्ञान का अंधेरा छट जाने से ही सत्य की ज्योति हमारे जीवन को प्रकाशित करती है। हम मृत्यु से अमरता की ओर बढ़ते हैं। सत्य ज्ञान की प्राप्ति होने पर ही मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले राक्षसों को पहचान पाना संभव होता है। तभी पता चलता है जिन्हें हम अपना हितैषी समझते हैं वही हमारी जड़ खोदते हैं। जिन्हें शत्रु समझते थे वे ही असली मित्र हैं।

भारतीय जीवन पद्धति का यही सार है। भारतीय विद्याओं का यही लक्ष्य है। अंतःकरण में परम ज्ञान को पाकर उसके प्रकाश से जीवन भर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे, ऐसी यहां की पूरी व्यवस्था है। चित्र में अज्ञान की समाप्ति होने से सारे कार्य तदनुसार और तदनुरूप ही होते हैं और मनुष्य सरलता से आत्मोन्नति के मार्ग पर बढ़ता जाता है।

अज्ञान का अंधेरा छंटने पर ही जीवन लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव हो सकती है।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

मैं बिलासपुर में गत् दिनों आर्य समाज के संस्थापक तथा सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय लाला धर्मदास जी के सम्बन्धी के अचानक देहावसान होने पर उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र बब्बल के अनुसार उनका वैदिक रीति से अंतिम संस्कार कराने हेतु गया था। मृतक श्री रमेश का शव एक कमरे में पड़ा था जिसमें उनके बड़े भाई के साथ मैं भी काफी देर तक बैठा रहा। अंत में कमरे से बाहर निकल कर मैंने वहां उपस्थित महिलाओं से कहा कि मैं लम्बे समय तक श्री रमेश के भाई के साथ बैठा रहा और बातें करता रहा लेकिन रमेश जी लेटे ही रहे, उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। वहां पर उपस्थित सभी सम्बन्धी महिलाएं मेरे इस वाक्य को सुनकर हैरान रह गई। उन्होंने शायद यह समझा कि कहीं पंडित जी का दिमाग अचानक ही तो नहीं फिर गया जो उल्टी–पुल्टी बातें कह रहे हैं। मैंने उन महिलाओं की बात को एक दम भांप लिया और उन्हें कहा कि मेरा दिमागी संन्तुलन बिल्कुल ठीक है और आप सभी का मेरी कही बात पर चुप हो जाने को मैं भांप गया और आप सभी अपनी जगह ठीक हैं कि मृतक ५२ वर्षीय रमेश मेरे साथ कैसे बात करते ? इस सम्बन्ध में मैं एक रोचक उदाहरण आपको बता रहा हूं। मैं एक बार छातर ग्राम से अपने घर वापिस जा रहा था कि सहसा पुराने बाजार की ओर से मुझे शमशान भूमि को ले जा रहे एक मृतक व्यक्ति से सामना करना पड़ा। २०–२५ साल पहले की यह बात रही होगी। जैसे ही मृतक देह पुल के उपर से गुजरी मैंने स्कूटर खड़ा कर दिया और जब मैंने सोचा कि अब मैं आसानी से पार हो जाऊंगा तो मैंने स्कूटर को स्टार्ट किया। इसी समय ऊपर से मृतक व्यक्ति मुझसे कहने लगा कि आखिर आपको घर जाने की इतनी जल्दी क्या है ? मुझे कम से कम अन्य व्यक्तियों के साथ–साथ शमशान भूमि तक पहुंचा दो फिर घर चले जाना। उस मृतक व्यक्ति के इन शब्दों को सुनकर मैं हैरान हो गया और ऐसे लगा कि मेरे पैरों के नीचे से पृथ्वी खिसक रही है। मेरी इस अवस्था को देखकर मृतक व्यक्ति मुझसे कहने लगा कि ऐसा लगता है कि आप बहुत भयभीत हो गए हो। यदि कहो तो मैं आपको घर तक पहुंचा आऊं। मेरा इस बात को सुनना ही था कि मेरे मुखमंडल में पसीना छा गया और मैंने समझा कि कहीं ये मृतक देह उपर से नीचे छलांग लगा दे तो फिर अनर्थ हो जाएगा। मैंने रूमाल निकालकर अपने मुख पर पसीने को पोंछा। मेरी इस भयभीत और कारूणिक स्थिति को देखकर मृतक व्यक्ति मुझसे कहना लगा कि आप बहुत भयभीत हो गये हैं, जाओ कुछ भी नहीं है। आज हम सब "पहली अप्रैल फूल" मना रहे हैं। उनके इस वाक्य को सुनकर मैंने कड़कते हुए उन सभी व्यक्तियों को कहा कि मुर्खो आप तो "पहली अप्रैल फूल" मना रहे हैं लेकिन इस ढंग से आप सभी वंदीगृह में भी जा सकते हैं क्योंकि आपका "पहली अप्रैल फूल" मनाने का यह ढंग सर्वथा अनुचित है। इस समय मैं हैरान था कि कन्धे पर उठा कर ले जा रहे सभी व्यक्ति कैसे खड़े थे वे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे और मेरी बुद्धि ने उस समय मेरा साथ छोड़ दिया जिससे मैं यह भी नहीं समझ पाया कि जो ये बालक मृतक शरीर को शमशान भूमि ले जा रहे हैं, स्वयं उसको भूत समझ कर क्यों नहीं भागे ? लेकिन मेरी बुद्धि ने मेरा साथ छोड़ दिया था और इस क्रूर मजाक को समझने में मुझे देर लग गई।

आर्य समाज के संस्थापक और विश्व में वेदों का डंका बजाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर रचना "सत्यार्थ प्रकाश" में स्पष्ट लिखा है कि जब शरीर से आत्मा चली जाती है तो यह शरीर शिव न रह कर शव बन जाता है और इस शरीर को प्रेत की संज्ञा दी जाती है। जब शरीर को जला दिया जाता है तो उसकी संज्ञा भूत हो जाती है अर्थात् अमुक व्यक्ति अब भूतकाल में समा गया है अर्थात् समा कर पंच तत्व में विलीन हो गया है। वह कभी भी पुनः इस शरीर को धारण नहीं कर सकता। भूत से स्वामी जी महाराज का अभिप्राय लम्बे–लम्बे दांतों वाले भूतों से नहीं है और न ही इस प्रकार के भूत होते ही हैं। इस घटना ने मेरे मन और मस्तिष्क में अमिट दबाब और प्रभाव डाला। आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के सत्संग में जब मैंने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए तो वहां पर उपस्थित दयानन्द मठ दीननगर के संचालक स्वामी सदानन्द जी महाराज ने मुझसे कहा कि आप तो गायत्री के उपासक हैं। फिर आप के जीवन में ऐसा क्यों हुआ ? मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि उस समय तो मेरे प्राण निकल रहे थे और कोई भी मन्त्र मुझे नहीं दिखाई दे रहा था। मुझे तो केवल और केवल मात्र वही मृतक व्यक्ति, नहर और साक्षात मृत्यु दिखाई दे रही थी। अर्थी ले जा रहे युवक और उसे ले जा रहे सभी व्यक्तियों तथा अन्य साथियों को मैंने कड़कते हुए कहा कि भविष्य में इस प्रकार की कोई हरकत मत करना बर्ना तुम सभी वंदीगृह में पहुंच जाओगे और वहां सरकारी रोटी खाओगे क्योंकि कोई भी छोटे दिल का व्यक्ति ऐसी बात को सुनकर शरीर भी त्याग सकता है। ऐसी स्थिति में आप को लेने के देने पड़ जाऐंगे। पहली अप्रैल को यदि मनाना ही है तो शालीनता के साथ मनाओ। मेरा ऐसा कहना ही था कि वे सभी वहां से नौ–दो–ग्यारह हो गए।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

विदेशों में आर्य समाज की गौरवमयी स्थापना

♦ज्ञानेश्वर आर्य, बैंकाक, थाईलैंड

♦२८ अक्टूबर से २२ नवम्बर २०१४ तक सिंगापुर, बैंकाक, मलयेशिया देशों की यात्रा की। यद्यपि २ वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी, किन्तु सा. आ. प्र. सभा के प्रधान मान्य सुरेशचन्द्र जी के विशेष आग्रह पर तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुनः यात्रा का कार्यक्रम बना लिया। सम्मेलनों में ३०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें U.S., U.K., CANADA, AUSTRALIA, MAURITIUS आदि अनेक देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुवे। सिंगापुर आर्य समाज की स्थापना को २०० वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्य समाज को ७५ वर्ष। हजारों किलोमीटर दूर देशों में, जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है। कुछ छोटी–छोटी अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा।

♦पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगति को देखकर अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण व आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि ये सुखी हैं, शांत है, संतुष्ट है। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। बिना आत्मा–परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को चलाये बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न कर ले, पूर्ण सुखी नही हो सकता। दुःखों से घिरा रहता है।

♦वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत् पुरूषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धांतों को ''सांपराय'' शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बंधी आचरण नहीं करते हैं वे ''मूढ'' संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती है कि "This is the first and last life, There was no life before, this life and there will be no life after this life." यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा। अपने इस चार्वाक्/विरोचन/नास्तिक वादी सिद्धांत के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, चातुर्य, श्रम का पूर्ण रूप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान्, बनाकर अधिकाधिक भोगों को भोगने का प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं। किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अंधेरा है, दुःख ही दुःख है।

♦जब किसी व्यक्ति–समाज–राष्ट्र का जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन भी भिन्न होंगे और शैली भी। बुद्धिमान् व्यक्ति अन्य व्यक्ति के रूप, रंग, आकृति, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, पद, प्रतिष्ठा, भौतिक सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देखकर यह नहीं मान लेता कि यह पूर्ण सुखी है, शान्त है। पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियाँ हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरता है, तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, तो वह निश्चित रूप से अशान्त, चिंतित भयभीत, दुःखी रहता है, चाहे बाह्य लक्षणों से दिखाई न दे।

♦प्रेममार्ग के पथिक, चाहे पश्चिम में हो या पूर्व में या अपने देश ये बिना श्रेयमार्ग के सिद्धांत, शैली को अपनाये, पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते हैं, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर लेवें। सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति, असामान्य/प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति/परिवार/समाज/राष्ट्र का अहित करने को समुद्यत हो जाता है। जिन मनुष्यों को अन्तः करण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है, अथवा जो, शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरूद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय, ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा–स्वरूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पाते हैं और वे स्वच्छंद होकर, निर्लज्ज होकर, पाप–अपराधों को करते रहते हैं।

♦हे परमेश्वर! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देखकर खिन्न होते हैं, घृणा–ग्लानी करते हैं किन्तु इससे क्या लाभ? जब आत्मनिरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण दिखाई देते हैं। अवगुण न हों या न्यून हों, फिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्ण रूप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे। इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्वप्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्र गुणों से हमें परिपूर्ण कर दो। तब आपके विशेष ज्ञान–बल–सामर्थ्य से युक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके, उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, खान–पान, आचार विचार वाली गौरवमयी–अस्मिता की स्थापना करने में समर्थ हो जायेंगे और आपका ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का आदेश पूरा कर देंगे, इसी आशा विश्वास के साथ।

thearyasamaj.org

वैदिक काल के हथियार

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

चारों वेदों का एक–एक उपवेद है। इन उपवेदों में एक उपवेद धनुर्वेद हैं। जो धनुर्विद्या के लिये समर्पित है। इसके अतिरिक्त धनुष चन्द्रोदय तथा धनुष प्रदीप ग्रन्थ भी वैदिककाल में प्रयोग होने वाले धनुष और बाणों पर प्रकाश डालते हैं। वेदों में कुछ अस्त्र तथा शस्त्रों का भी वर्णन आता है।

अस्त्र : अस्त्र वे हथियार थे जिन्हें दूर से फैंका जाता था तथा जिनका संचालन मंत्र, यंत्र या जंत्र द्वारा होता था। इन अस्त्रों पर देवताओं का अधिकार होता था। जिन्हें स्मरण कर और उस मंत्र या जन्तर का प्रयोग कर चलाया जा सकता था। इन अस्त्रों का प्रयोग तभी किया जाता था जब अन्य हथियार प्रभावी सिद्ध नहीं होते थे। अस्त्रों की मारक क्षमता अचूक होती थी। परन्तु प्रश्न उठता है यह मन्त्रों और यन्त्रों से कैसे संचालित होते थे, शोध का विषय है। कुछ अस्त्रों के नाम इस प्रकार थे : गरूड़ास्त्र, ब्रह्मास्त्र, पाशुपातास्त्र, नागास्त्र, दिव्यास्त्र आदि। ब्रह्मास्त्र से अचूक निशाना लगता था। इसीलिये यह कहावत बन गई है कि सफलता के लिये ऐसा प्रयास ब्रह्मास्त्र सिद्ध हुआ।

दिव्यास्त्रों के नाम थे : पर्जन्य, वायव्य, पन्नग नारायणास्त्र, ब्रह्मशिरा, अमोघास्त्र आदि। अग्नि पुराण में अस्त्रों को चार भागों में बांटा गया है।

१. अमुक्ता २. मुक्ता ३. मुक्तामुक्त ४. सनिवृति।

शस्त्र : शस्त्र वे हथियार थे जिनका का संचालन हाथों से होता था। जैसे माला, खड़ग, खण्डा, खंजर, वरच्छा, बज्र, परशु, त्रिशूल, गुरज, गदा, वाण आदि।

कुछ अंगों की रक्षा के लिये भी कई उपाय किये जाते थे। हर तलवार बाज के पास ढाल होती थी, जो पतली धातु या मोटे चमड़े से बनाई होती थी। छाती तथा पीठ के लिये कवच या चर्म होते थे।

शिरत्राण : यह सिर पर धारण किया जाता था और सिर की रक्षा करता था।

कण्ठत्राण : यह गले की रक्षा के लिये था भुजाओं और टांगों की रक्षा के लिये बाजु बन्द के समान चमड़े या पतली धातु के रक्षा वस्त्र पहने जाते थे। कलाई के बचाव के लिये कड़े पहने जाते थे। या चमड़े की पट्टी या धातु की बांधी जाती थी। इसे मणिबन्ध भी कहा जाता था।

वेदों में १८ युद्ध कलाओं का वर्णन है। उस समय युद्ध तथा अस्त्र–शस्त्र विद्या के सिद्धांत वर्तमान सिद्धांतों से भिन्न थे। आर्यों के युद्धों की रूप रेखा ऋषि बनाते थे। विजय होने पर ऋषि आश्रम बनाकर वहीं रहते थे तथा स्थानीय लोगों को अपनी सभ्यता में परिवर्तित करते थे अर्थात् वे वहां वैदिक धर्म तथा संस्कृति का प्रचार करते थे। कोलितर, शाम्बर, किरात नाग, कुनिन्द, गन्धर्व आदि से उनके युद्ध हुए। आर्यों के राजा दिवोदास का वर्णन आता है, जो रावी, सतलुज और ब्यास के मध्य १०० दुर्गों के स्वामी कोल नरेश शम्बर से ४० वर्ष तक लड़ा। उसने सभी दुर्ग नष्ट कर विजय पाई। अस्त्रों और शस्त्रों के प्रयोग में संयम वर्तना उस समय के युद्धों की विशेषता थी। आज कल भी मिसाईल इत्यादि अति मारक शक्ति तथा अचूक निशाने के लिए तैयार हैं। जिनके नाम प्राचीन अस्त्रों पर रख गये हैं। परन्तु विश्व शान्ति के लिये यह आवश्यक है इनके प्रयोग में संयम बरता जाये।

रामायण तथा महाभारत से इन अस्त्रों और शस्त्रों की जानकारी हमें मिलती है जिनका प्रयोग प्रचुर मात्रा में इन युद्धों में किया गया। बानर और राक्षस भी जातियाँ मानी गई हैं जो दक्षिण के मूल निवासी थे। इतिहासकारों ने राम का बानरों की सहायता से रावण पर विजय को आर्यों की दक्षिण भारत विजय माना है।

प्रज्ञापराधो मूलं सर्वरोगाणाम्

'बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है।' परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते; सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आत्मिक सभी रोग पैदा होते हैं। इसलिए कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी कहा–

बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। गीता २। ६३।।

'बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।' महाभारत के उद्योगपर्व में आता है कि जब देवता किसी की रक्षा करना चाहते हैं या किसी का नाश करना चाहते हैं तो क्या करते हैं ? स्पष्ट वर्णन है कि जब वे नष्ट करना चाहते हैं तो उसके लिए विष नहीं भेजते, तलवारें नहीं बनाते, किसी को यह नहीं कहते कि जाकर अमुक व्यक्ति को नष्ट कर आओ। केवल एक बात करते हैं और वह यह कि उसकी बुद्धि बिगाड़ देते हैं। तब वह स्वयं ही ऐसे रास्ते पर चल पड़ता है, जो विनाश का रास्ता है; और जब वे किसी की रक्षा करना चाहते हैं, तब उसके लिए अंग–रक्षक नहीं भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाओ, इसकी रक्षा करो, अपितु उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा देते हैं कि वह स्वयं ही रक्षा के मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं ही उसकी रक्षा होती है। –चरक

thearyasamaj.org

नारी उत्थान में ऋषिवर का योगदान

♦कृष्ण चन्द आर्य

दैनिक समाचार पत्रों में पढ़कर और जानकर मन और मस्तिष्क को बहुत ठेस लगी जिसमें जगत गुरू शंकराचार्य जी ने प्रत्येक भारतवासी को दस–दस संतानें पैदा करने को कहा ताकि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को पुनः आगामी चुनावों में प्रधानमन्त्री के पद पर सुशोभित करने का गौरवशाली सुअवसर प्राप्त हो सके। हमारे विचार में बच्चे पैदा करने और नारी को बच्चे पैदा करने की मशीन समझना अत्यन्त दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए कि हमारी संतानें मन और मस्तिष्क से स्वस्थ और निरोग रहें। हमारे शास्त्रों में ये लिखा है, "एकः चन्द्रः तमो हन्ति, नचतारागणोऽपि च" अर्थात् अकेला चन्द्रमा ही समस्त अन्धकार को दूर कर देता है जिसे आकाश के अनेकों तारों के समूह भी दूर नहीं कर पाते। अपने आप को जगत् गुरू कहलाने वाले इन विभूतियों को कम से कम इस बात पर गहनता से चिंतन और मनन करना चाहिए कि देश की उन्नति अधिक बच्चे पैदा करने में नहीं अपितु उनको समुचित शिक्षा देने और बुद्धिमान बनाने में है। हमारा देश ऋषि–मुनियों की धरती रही है। इस भूमि ने शांति, भ्रातृ प्रेम और सज्जनता एवं सहनशीलता की वयार बहाई है। भारत विश्व गुरू कहलाने से पहले समस्त मानव समाज को प्रेम, शांति, एकता और भाईचारे के सूत्र में बांध कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। यह समस्त भारतवासियों के लिए गर्व का विषय है कि हमारे एक–एक व्यक्ति देश, जाति और मानवता की सेवा के लिए समर्पित है। इस से बड़ा सौभाग्य और कोई दूसरा नहीं हो सकता। पाकिस्तान के पेशावर में सैनिक पाठशाला के नवम कक्षा के छात्रों को आतंकियों द्वारा कुचल देना कौन से गौरव की बात है ? इससे अधिक शर्म और दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है ? आज जो पाकिस्तान आतंकियों से दो–दो हाथ करने के लिए वाध्य हो रहा है, उसे सपने में भी यह आभास नहीं था कि आतंकी इस प्रकार के कुत्सित कार्यों को अंजाम देंगे ? पाकिस्तान के सेना प्रमुख ने तो प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को जेलों में बन्द २००० कैदियों को मृत्युदंड देने की चेतावनी तक दे डाली। वास्तव में जिन बच्चों को कुछ ही घंटों में हंसते–गाते अपने घरों में पहुंचना था उनके शरीर कफन में बंद हो कर उनके घरों में पहुंचे। इस से बड़ी शर्म और दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है। आज समस्त विश्व इन आतंकवादियों से दो–दो हाथ करने के लिए कटिवद्ध है। वास्तव में प्रेम, अहिंसा, शांति, सद्भावना द्वारा ही हम उन्नति के शिखर पर पहुंच सकते हैं। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, अमंगल के बीज बोकर कभी भी हम उन्नति प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए यह अति आवश्यक है कि कोई भी व्यक्ति विश्व शांति को पलीता लगाने का प्रयत्न न करे। विश्व के समस्त प्राणी उस परम पिता परमात्मा की वाटिका के अनमोल पुष्प हैं। हमें इसकी रक्षा करने हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए। मन, वचन और कर्म से हमारा कोई भी योगदान विश्व अशांति के लिए नहीं होना चाहिए। आज मानव बारूद के ढ़ेर पर बैठा है। कभी भी और किसी भी परिस्थिति में तनिक सी चिंगारी महान् विस्फोट करके मानवता के सूर्य को अस्त कर सकती है। इस से हमें सर्वदा बचना चाहिए। उन्नतशील बनने के लिए रात–दिन प्रयत्नरत्त रहना चाहिए। एक–दूसरे के सुख–दुख का भागी बनकर मानव की आंखों के आंसूओं को पोंछते रहना चाहिए। तभी और केवल तभी महान् समाज सुधारक कबीर दास की यह युक्ति चरितार्थ हो सकती है :

कबीरा जब हम जन्मिया, जग हंसे हम रोये,
ऐसी करनी करि चलो, हम हंसे जग रोये।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पानीपत की एक सभा में लिंगानुपात पर कहा कि भ्रूण हत्या पाप और मानव पर कलंक है। पूरे राष्ट्र में हरियाणा एक ऐसा प्रांत है जहां लिंगानुपात की दशा अत्यन्त चिंतनीय है। उन्होंने कहा कि यदि बेटियां नहीं होंगी तो बहुएं भी नहीं होंगी। इस दिशा में उन्होंने बटियों की शिक्षा के लिए अत्यन्त महत्वूपर्ण सुझाव भी दिये। यह सभी बातें प्रशंसनीय, सारगर्भित और देश और प्रदेश की जनता को सिर माथे स्वीकार करने की आवश्यकता है। इसी में ही समस्त देश का बहुमुखी विकास छुपा है। हमें हैरानी केवल इस बात पर होती है कि गुजरात में पैदा हुए ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने नारी जाति के उत्थान हेतु अत्यंत प्रसंशनीय कार्य किया है। जिस समय स्त्री शिक्षा को पाप समझा जाता था। उसी समय ऋषिवर ने महिलाओं के लिए स्कूल खोले और उनके अध्ययन और अध्यापन हेतु शक्ति और सामर्थ्य अनुसार व्यवस्था की। पौराणिक जगत में उस समय बेटियों को स्कूल भेजना बुरा समझा जाता था। आर्य समाज के प्रचारकों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता था। यह ऋषिवर दयानंद का ही कमाल था कि उनके जीवन काल में महिलाएं पढ़–लिख कर ऊंचे पदों पर आसीन हुईं लेकिन यह अति दुर्भाग्य पूर्ण है कि आज देश की महान् हस्तियां उस महान् आत्मा का कहीं भी वर्णन करते हुए नहीं

thearyasamaj.org

दिखाई देती। उस समय यातायात के साधनों की कमी थी जिस कारण बालिकाओं की शिक्षा की सुचारू व्यवस्था आजकल की तरह नहीं हो पाई। फिर भी ऋषिवर ने स्त्री शिक्षा पर जोरदार आवाज़ उठाई और जनता को समझाया कि स्त्री शिक्षा में ही परिवार और समाज का उत्थान छिपा हुआ है। पढ़ी–लिखी लड़की ही दोनों परिवारों को सुखी और समृद्ध बना सकती है। सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा में सम्बन्ध में उठाये गये कदमों पर विचार करते हैं तो ऋषिवर दयानन्द, आर्य समाज और डी. ए. वी. पाठशालाओं द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों को कैसे नकारा जा सकता है। लेकिन दुर्भाग्य है कि आज वर्तमान सरकार बालिकाओं के उत्थान हेतु बहुत कुछ कह रही है लेकिन प्रारम्भ में इस हेतु जिस विभूति ने कार्य करने का साहस किया उस ऋषिवर दयानन्द की सेवाओं को भूलती नज़र आ रही है। बालिकाओं के उत्थान एवं विकास हेतु जो कदम ऋषिवर दयानन्द ने उठाये उन्हें भूलने पर भी नहीं भुलाया जा सकता। अपने समय में ऋषिवर देव दयानन्द ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में अपनी बेटियों को देव दासियां बनते हुए देखा जिन्हें पंडों को दान कर दिया जाता था तथा सदा और सर्वदा के लिए जिनका जीवन नर्क तुल्य बना दिया जाता था। ऋषिवर दयानन्द ने दासी प्रथा के विरूद्ध जोरदार आन्दोलन किया और समाज की दिशा और दशा सुधारने के लिए बालिकाओं की शिक्षा पर बल दिया। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही बालक–बालिकाओं की शादी के सम्बन्ध में आह्वान किया। आज उस युग पुरूष और देवता के पद चिन्हों पर चलने की अत्यन्त आवश्यकता है। मानव जीवन का सम्पूर्ण विकास ही बालिकाओं की शिक्षा पर निर्भर करता है।

''उर्मिला से भी आगे''

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जब १४ वर्षों के लिए वनगमन का आदेश कैकेयी ने सुनाया तो राम जी ने सहर्ष स्वीकार किया। उनकी धर्मपत्नी भी साथ गईं तथा अनुज लक्ष्मण भी पीछे नहीं रहे परन्तु लक्ष्मण की धर्मपत्नी उर्मिला नहीं गईं। वे क्यों नहीं गईं, इस विषय में रामायण के रचनाकार ऋषि वाल्मीकि ने कुछ नहीं लिखा। पति–वियोग में उर्मिला ने १४ वर्ष किस प्रकार की मानसिक व शारीरिक स्थिति में व्यतीत किए यह वही जान सकते हैं, जिन पर ऐसी घटना घटित होगी या हुई होगी परन्तु इतना निश्चित है कि जनकसुता उर्मिला का त्याग व योगदान उपलब्ध इतिहास में अपूर्व था। उनके इस योगदान के बिना लक्ष्मण अपने अग्रज व अपनी भाभी की सेवा व सुरक्षा के प्रति निष्ठा का दृढ़ता व सफलता से पालन नहीं कर सकते थे। आज लक्ष्मण इतिहास में अपने चरित्र व समर्पण के आधार पर आदर्श भाई व देवर स्थापित हैं। अंग्रेजी की कहावत Behind every great man there is a woman अर्थात् प्रत्येक महापुरुष की सफलता के पीछे किसी महिला का योगदान होता है, लक्ष्मण व उर्मिला के जीवन पर पूर्णतः सही लागू होती हैं।

उर्मिला को वाल्मीकि ने ही नहीं, कालिदास, भवभूति, तुलसीदास तथा अन्य किसी संस्कृत व हिन्दी कवि ने वर्णनीय नहीं समझा। हाँ, आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने अपने महाकाव्य 'साकेत' में कुछ सीमा तक उपस्थित किया है परन्तु वह साहित्यिक दृष्टि से तो स्वागत योग्य है, मार्मिक है परन्तु उर्मिला के समकालीन ऋषि वाल्मीकि ने ही जब कुछ विशेष वर्णन नहीं किया तो अन्यों से शिकायत कैसी ?

अभी जब भारतीय लोकसभा के चुनावों की प्रक्रिया चल रही थी तो एक आधुनिक उर्मिला का नाम प्रकट हुआ है जिसका नाम जशोदाबेन है। वह ४५–५० वर्षों से पति से पृथक पिता के घर में रहकर शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करती रही हैं। इनका विवाह छोटी अवस्था में हो गया था व तरुणावस्था में ही इनके पति नरेन्द्र मोदी अपनी इच्छा से एक राष्ट्रीय संगठन उनको अर्पित हो चुके थे व गृहस्थ के कार्यों तक सीमित होने तथा गृहस्थ आश्रम में टिकने की उनकी प्रवृत्ति न थी। अब वे प्रधानमंत्री बन गए हैं। चुनाव अभियान के दिनों में उनके इस कार्य को विपक्षियों ने नारी वर्ग का अपमान बताया था व स्त्री जाति के प्रति उपेक्षा करने का प्रमाण घोषित किया था जो उनके अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए साधन ही था।

ऐसे लोगों को हम स्मरण दिलाते हैं कि छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ गुरु रामदास का जब विवाह–संस्कार हो रहा था तो महाराष्ट्र की स्थानीय परम्परानुसार एक अवसर पर पुरोहित ने उन्हें कहा–''सावधान!'' यह सुनते ही समर्थ गुरु ने कहा–''बहुत–बहुत धन्यवाद पुरोहित जी।'' यह कहकर उन्होंने विवाह–मण्डप छोड़ दिया व बिना विवाह किये चले गये। विवाह अधूरा ही रह गया। मण्डप में बैठी वधू पर क्या बीती व भविष्य में क्या हुआ, मुझे पता नहीं पर इतना निश्चित है कि रामदास जी विवाह मण्डप से उठ गये थे। क्या नरेन्द्र मोदी के विरोधी रामदास गुरु को स्त्रीजाति का विरोधी घोषित करने का साहस करेंगे ? इसी प्रकार स्वामी रामतीर्थ ने अपनी पत्नी की इच्छा/स्वीकृति के बिना उसका परित्याग करके संन्यास ग्रहण कर लिया था व देश–विदेश में अपने उपदेशों से भारत को ख्याति दिलाई थी। क्या

thearyasamaj.org

विपक्षी रामतीर्थ को अपनी पत्नी का अपमान करने वाला स्वीकारते हैं ? आदि शंकराचार्य बाल्यावस्था में ही वैराग्य की ओर अग्रसर हो रहे थे परन्तु उनकी माता उन्हें संन्यास लेने से रोकती रहीं। एक दिन माता को उन्हें स्वीकृति देनी ही पड़ी थी तथा वे माता को अकेली छोड़कर संन्यासी बन ही गए थे। स्पष्ट है, उन्होंने माता की सेवा नहीं की। क्या आदि शंकराचार्य को इस आधार पर मातृशक्ति का शत्रु इतिहास में किसी ने माना है ? आज से अढ़ाई सहस्त्र वर्ष कपिलवस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ एक रात चुपचाप राजमहलों, अपनी पत्नी यशोधरा व नवजात पुत्र राहुल को त्याग कर वन में चला गया था। बादं में यही सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध बनकर संसार में प्रसिद्ध हुआ व इतिहास में नारी जाति का द्रोही उसको किसी ने कहा। गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी पत्नी के कहने से ही ईशभक्ति का जो मार्ग ग्रहण किया, उसमें सैद्धान्तिक स्तर हमारा मतभेद हो सकता है परन्तु उन पर अपनी पत्नी को बीच में छोड़कर भाग जाने का आरोप किसी ने नहीं लगाया। सुकवि कालिदास ने भी पत्नी का त्याग किया परन्तु इतिहास में संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्यकारों में अपना काम व नाम स्थापित करके स्वयं व भारत को गौरवान्वित किया है। इसी प्रकार गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक गाँव में उत्पन्न हुए मूलशंकर के माता–पिता ने जब उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके विवाह की तैयारी कर ली थी तो वह एक रात घर, माता–पिता व भाई–बहनों को सोता छोड़कर चुपचाप चला गया। माता जी की सेवा वह भी न कर पाया परन्तु अन्धविश्वासों से ग्रस्त व वेदों से विमुख संसार को अपनी घोर तपस्या व कठिन साधना से प्राप्त शारीरिक व आध्यात्मिक शक्ति द्वारा जो उपकार किये, वे अपूर्व हैं, अनुपम हैं। यही मूलशंकर संन्यासी बनकर महर्षि दयानन्द सरस्वती नाम से सुविख्यात हुआ। एक ओर महापुरुष का नाम भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। वे हैं–मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र। उनके पिता दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए दो वरों का अनुचित लाभ लेने के कैकेयी के कुप्रयास से ही राम को वन जाना पड़ा वे वन में जाएं, ऐसा न तो दशरथ चाहते थे तथा न ही कौशल्या की इच्छा थी। पिता दशरथ तो यहाँ तक कह बैठे कि–"हे राम! तेरे वन जाने से मैं न बचूँगा। मैं तो वचनों में बन्धा हूँ। प्रजा तुम्हारे साथ है। तुम मुझे बंदीगृह में डालकर राजा बन जाओ। मैं बच जाऊँगा।" क्या राम ने माता–पिता की इच्छा पूर्ण की ? क्या माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध उनके वन गमन को अधर्म कहने का कोई व्यक्ति या राजनैतिक दल दुस्साहस कर सकता है ?

मैं नरेन्द्र मोदी व जशोदाबेन के प्रसंग में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जब कोई अपनी और केवल अपनी शारीरिक व भौतिक इच्छाओं व आवश्यकताओं की ही पूर्ति में स्वयं को अर्पित कर देता है तो वह सामान्य व्यक्ति ही कहलाता है परन्तु जब व्यक्ति अपने घोंसले में न रहकर उड़ने को विस्तृत गगन तलाशता है, तब उच्च आदर्श तथा उच्च विचार वालों के सामने परिवार से भी अधिक लोकहित रहता है। यदि कोई आलोचक उससे माता, पिता, पत्नी व पति की ही सेवा करता हुआ देखना चाहता है तो उसका ऐसा प्रयास या ऐसी इच्छा करना ऐसा ही है, जैसे कोई गगन विहारी को घोंसले में सीमित करता है। समुद्र को घड़े में भरने की चेष्टा भी इसे आप कह सकते हैं परन्तु याद रखिए कि समुद्र घड़े में समा ही नहीं सकता। इसी कारण दयानन्द, राम, शंकराचार्य, रामतीर्थ, समर्थ गुरु रामदास तथा बुद्ध घर–परिवार तक सीमित नहीं रहे। लौकिक व पारिवारिक कामनाओं से आगे राष्ट्रीय व आध्यात्मिक इच्छाओंका वरण पाप नहीं। अतः स्वहित से अधिक लोकहित को ही मुख्य रखकर घर–परिवार का उन्होंने त्याग किया। इनको कितनी सफलता मिली, यह एक पृथक् प्रश्न है परन्तु यह निश्चित है कि उनके त्याग व उनकी विस्तारता ने ही उनको यश तथा प्रसिद्धि दिलाई तथा लोककल्याण हुआ। राम, बुद्ध व दयानन्द घर न छोड़ते तो दशरथ व कौशल्या, शुद्धोधन व मायादेवी तथा कर्षन जी व अमृतबाई संसार में अपरिचित ही रहते। लक्ष्मण यदि राम के साथ वन में न जाते तो अपने ही भाई शत्रुघ्न की तरह रामायण का एक सामान्य पात्र ही कहलाते। उर्मिला यदि लक्ष्मण के त्याग में बाधा बनती तो कैकेयी की तरह वे भी रामायण की एक दुष्टा पात्र ही कहलातीं। उर्मिला और लक्ष्मण के त्याग व समर्पण ने उन दोनों को संसार में श्रद्धास्पद बनाया है।

जशोदाबेन ने लगभग ४५–५० वर्षों तक अपना जीवन एक शिक्षिका के रूप में पूर्ण ब्रह्मचारिणी रहकर सादगी व शालीनता से जिया है। यह अवधि उर्मिला की पति से वियोग की अवधि से लगभग साढ़े तीन गुणा अधिक है। इस अवधि में उसने कुछ मांगा नहीं, न ही किसी से अपने पति की तनिक भी शिकायत की है। फिर विपक्षियों को नरेन्द्र से क्यों शिकायत थी ? वास्तव में इनको न तो जशोदाबेन से सहानुभूति है तथा न ही अपने देश से लगाव था। यह जो भी है वह नरेन्द्र मोदी को जनता की नज़र में गिराकर वोट प्राप्त करने का प्रयास था। यदि इन्हें मातृशक्ति के सम्मान करने की तड़प थी तो इन्हें राम, दयानन्द एवं शंकराचार्य की निन्दा करनी चाहिए तथा यदि विपक्षियों को पत्नियों के अधिकारों की रक्षा करने की चिन्ता थी तो उन्हें बुद्ध, रामतीर्थ, लक्ष्मण तथा समर्थ गुरु रामदास की तरफ अंगुली पहले उठानी चाहिए थी परन्तु ऐसा उन्होंने इसलिए नहीं किया क्योंकि उन महापुरुषों की निन्दा करने से आज के वोटरों के वोट इन्हें नहीं मिल सकते थे। यह सारा वोट का खेल था।

thearyasamaj.org

संस्कारविहीन शिक्षा-बढ़ते अपराध

♦नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', पंचकूला (हरियाणा)

देश में निरन्तर बढ़ते अपराधों विशेषरूप से अपनी आधी आबादी पर हो रहे बलात्कार जैसे जघन्य अत्याचारों को देखते हुए इसके कारणों और दूरगामी समाधानों पर जब हम विचार करते हैं तो देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमियाँ और दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के नीति नियंताओं ने इस प्रचलित शिक्षा प्रणाली को चुन लिया। इस शिक्षा व्यवस्था को ब्रिटिश गुलामी के दिनों में लार्ड मैकाले द्वारा इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रुप से गुलाम बनाए रखने के लिए लागू किया था। लार्ड मैकाले ने इस शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश साम्राज्य की नीवें मजबूत करने के उद्देश्य से इस सोच के साथ थोपा था कि हम इस देश की भावी पीढी को उसकी संस्कृति की जड़ों से काट देंगे। परन्तु ना जाने क्यों किन कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के नीति नियंताओं ने गुलामी की मानसिकता की प्रतीक मैकाले की शिक्षक प्रणाली को अपनी भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए अपना लिया गया जिसके दुष्परिणाम हम अपने समाज की वर्तमान अवस्था में भुगत रहे हैं। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में तथाकथित विकास के नाम पर विनाश की ओर धकेलती इस शिक्षा में संस्कारों, धर्म शिक्षा आदि का कोई स्थान नहीं था। मैकाले की यह शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजों की सेवा करने के लिए क्लर्क और बाबू बनाने के लिए थी। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में वर्तमान समय में भी हम अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकते हैं लेकिन चूँकि इसमें संस्कार देने की कोई व्यवस्था ना होने के कारण इन डॉक्टरों, इंजीनियरों और मैनेजरों को हम एक अच्छा संवेदनशील मनुष्य बना पाने में पूरी तरह नाकाम हैं। यदि एक अच्छा डॉक्टर एक अच्छा इंसान नहीं है तो ईश्वर का रूप समझा जाने वाला डॉक्टर सेवा की भावना से किए जाने वाले कार्य को धन कमाने का व्यवसाय बना लेते हैं और शायद तभी किडनी चोरी, कन्याभ्रूण हत्या माँ के गर्भ में लिंग परीक्षण, दवाईयों और जाँच में कमीशनखोरी जैसी घटनाएँ सामने आती हैं और पूरे चिकित्सक समाज को शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। कमोबेश यही स्थिति इस शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी की हो जाती है।

इसके समाधान पर चिंतन करते समय हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत उस समय तीन प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ हमारे देश में उपलब्ध थीं। प्रथम–प्राचीनतम गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था, जिसमें शिक्षार्थी ब्रह्मचारी अपने माता–पिता का लाड़ दुलार छोड़कर आचार्य के गुरूकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हुए नया जन्म पाते थे। गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्गभेद के सभी ब्रह्मचारी एक साथ गुरुकुल में स्थापित आचार्य की व्यवस्था के अन्तर्गत रहते हुए जीवन की शिक्षा संस्कार प्राप्त करते थे। यह गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था पहली बार महाभारत काल में भंग हुई जब राजा धृतराष्ट्र ने पुत्रों के मोह में अंधे होकर गुरू द्रोण को राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर दुर्योधन आदि समस्त कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश कर दिया। तब शायद पहली बार दुर्योधन आदि को शिक्षा प्राप्त करते समय यह लगा कि हमारा आचार्य तो हमारे पिता की राज्य व्यवस्था के अधीन एक वित्तपोषित कर्मचारी है। अतएव उनके मन में कभी भी आचार्य के प्रति आदर का भाव नहीं रहता और उसी विद्यार्थी काल में आया जिद, उद्दंडता और बड़ों के प्रति अनादर का भाव जो आगे चलकर महाभारतके युद्ध का कारण बना। उस समय इस गुरूकुलीय शिक्षा की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने शिक्षा यज्ञ में अपना सर्वस्व आहूत करते हुए सफलता पूर्वक हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, माटिन्डु आदि स्थानों पर गुरूकुल स्थापित किए और इतिहास साक्षी है कि इन गुरूकुलों ने शिक्षा संस्कार देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कितने क्रान्तिकारी तैयार किए। लेकिन इस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को उस समय के नेताओं ने पुरानी धार्मिक कट्टरता वाली और प्रगति विरोधी मानकर खारिज कर दिया।

दूसरी शिक्षा प्रणाली जो शायद समय के अनुकूल थी। महात्मा हंसराज द्वारा नवीन और प्राचीन को जोड़कर बनाई गई थी, एक अनूठे आंदोलन के रूप में चलाई गई दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा व्यवस्था को अपना जीवन समर्पित करके चलाने वाले तपस्वी महात्मा हंसराज ने स्थापित किया। जिसमें आधुनिकतम शिक्षा के साथ–साथ महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिए गए सत्य वैदिक आर्य सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय करवाया जाता था।

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत शायद मानसिक गुलामी से पूरी तरह न मुक्त हो पाने के कारण उस समय के नेताओं ने गुलामी की प्रतीक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को अपना लिया। बच्चों के मन कोमल संवेदनशील कच्ची उर्वर मिट्टी की तरह होते हैं। उनमें जैसे बीज बो दिए जाएँ बड़े होकर वैसे ही बन जाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमने बच्चों को केवल पाश्चात्य भोगवाद की प्रेरणा दी और किसी भी प्रकार के कोई संस्कार नहीं दिए। आज वही पीढ़ी युवा अवस्था में संस्कार विहीन होकर अपराधों की तरह, विशेष रूप से भोगवाद में फँसकर, नारी को भोग की वस्तु मानकर बलात्कार सरीखे अपराध कर रही है। हम बड़ी–बड़ी बहस

thearyasamaj.org

करते हैं और कानून व्यवस्था के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते हुए राजनीति करते हैं। पर हमारा ध्यान इस बीमारी के मूल यानि दोषी शिक्षा व्यवस्था पर नहीं जाता बल्कि उसका तो हम और अधिक व्यवसायीकरण करते जा रहे हैं। हम आज अपने बच्चों को बड़े–बड़े डोनेशन देकर उच्च शिक्षा इसलिए दिलवाते हैं कि वह बड़ा होकर किसी एम. एन. सी. में मोटा पैकेज लेगा। जब हम भी एक व्यापारी की तरह बच्चों की शिक्षा में व्यवसाय की तरह इनवेस्ट करते हैं और फिर रिटर्न की आशा करते हैं। हमने खुद भी कभी बच्चों को शिक्षा में संस्कार देने का प्रयास नहीं किया। लेकिन अब भी यदि हम जाग जाएँ और इन सभी बुराईयाँ की जड़ वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तित करते हुए नैतिक एवं धर्म शिक्षा को भी शामिल कर लें तो निश्चित रूप से बच्चों को संस्कारवान बना पाएंगे और यही बच्चे कल के अच्छे आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र की मजबूत बुलंद इमारत का आधार बनेंगे और जब हमारे नागरिक संस्कारवान और सभ्रांत होंगे तो अपराध स्वतः कम हो जाएँगे। कोई भी संस्कारवान व्यक्ति नारी पर अत्याचार नहीं करेगा। कहा भी जाता है–यदि पहले ही सावधानी बरती जाए और बीमारी पैदा करने वाले कारणों को ही समाप्त कर दिया जाए तो बीमारी पैदा ही नहीं होगी।

'आजाद' ही रहे चन्द्रशेखर आजाद (२७ फरवरी शहीदी दिवस पर विशेष)

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

चन्द्रशेखर का जन्म मध्यप्रदेश के झाबुआ जिला के छोटे से गाँव भावरा में २३ जुलाई, १९०६ को हुआ था। इनकी माता का नाम जगरानी देवी और पिता पंडित सीता राम तिवारी था। चन्द्रशेखर एक ऐसे देशभक्त का नाम है जो १९२१ में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में केवल १४ वर्ष की किशोरावस्था में ही गिरफ्तार हो गये थे। चन्द्रशेखर को जब अदालत में पेश किया तो न्यायधीश ने उसका नाम पूछा–चन्द्रशेखर ने अपना नाम 'आजाद' बताया। क्रोधित होकर जज ने उसे १५ बैंतों की सजा सुनाई चन्द्रशेखर ने हर बैंत पर महात्मा गांधी की जय का नाद किया था। इस सजा के परिणामस्वरूप वे अपने उपनाम 'आजाद' के नाम से प्रसिद्ध हो गये। कुछ समय उपरान्त 'आजाद' हिन्दुस्तान सोशलिस्ट' रिपब्लिकन एसोसियेशन के कमांडर इन चीफ बन गये। इनके दल ने राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में ९ अगस्त, १९२५ को काकोरी के पास रेल से सरकारी खजाना लूटा और फिर भूमिगत हो गये तथा ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध गतिविधियों का संचालन करने लगे। अंग्रेज सरकार ने इन्हें भगौड़ा घोषित कर दिया और 'आजाद' को पकड़वाने के लिए तीस हजार रूपए के ईनाम की घोषणा कर दी। चन्द्रशेखर ने भी सरकार के हाथ जीवित न आने का ऐलान कर दिया। 'आजाद' आजाद ही रहे और अंग्रेज सरकार की पुलिस इन्हें जीते जी पकड़ न सकी और इसी प्रण के अनुसार वह अपना संग्राम साधते रहे और अंग्रेज सरकार को छकाते रहे। भारत माता की आजादी के लिए चन्द्रशेखर ने अपना जीवन ही बलिदान की वेदी पर सजा रखा था। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के देहावसान के उपरान्त सांडर्स से बदला लेने की योजना बनी। इस योजना में शहीद–ए–आजम भगत सिंह, राजगुरू, के साथ चन्द्रशेखर सम्मिलित थे। योजना के अनुसार भक्त सिंह और राजगुरू ने सांडर्स पर गोलियाँ चलाकर उसे लाला जी पर लाठियाँ बरसाने की सजा दे दी। यह घटना लाहौर पुलिस हैडक्वार्टर के निकट हुई परन्तु कोई भी अंग्रेज़ बाहर नहीं निकला। निकला तो एक भारतीय हवालदार चानन सिंह जिसे चन्द्रशेखर आजाद ने तीन बार चेतावनी दी कि हमारी हिन्दुस्तानियों से कोई लड़ाई नहीं है और वह भक्त सिंह और राजगुरू का पीछा न करे परन्तु वह न माना जिस पर आजाद ने अपने अचूक निशाने से उसका अंत कर दिया। यहाँ देखने की बात है कि इस योजना के लीडर जिन्हें बलराम के नाम से जाना जाता था ने भक्त सिंह और राजगरू की सुरक्षा का भार आजाद को सौंपा था। सांडर्स का वध करने के उपरान्त जो भी उन दोनों का पीछा करेगा उसे चन्द्रशेखर अजाद ठिकाने लगायेंगे। यह जोखिम भरा कर्त्तव्य आजाद ने बखूबी निभाया। उनके इस अदम्य साहस, भावना और कर्त्तव्य निष्ठा की दाद देनी होगी। २७ फरवरी, १९३१ को इलाहाबाद की 'अल्फ्रेड वाटिका' में अपने सहयोगी से मिलने गये तो सी. आई. डी. के एक हिन्दुस्तानी अफसर ने इनकी ही पार्टी के मुखविर की सहायता से पार्क में इन्हें पुलिस द्वारा घेर लिया। चारों ओर से इन पर गोलियाँ बरसाई जाने लगीं। आजाद की पिस्तौल से एस. पी. नाट बाबर की कलाई की हड्डी टूट गई। आजाद की टांग में गोली लगी जिससे वे उठने में असमर्थ हो गये। दोनों ओर से गोलियाँ बराबर चलती रहीं। अब आखिरी गोली अपने लिए आजाद है 'आजाद' ही रहेंगे, जीते जी अंग्रेज़ सरकार की पकड़ में नहीं आऐंगे और इसी अन्तिम गोली से खुद का अंत कर लिया। इनका अन्तिम संस्कार भी अंग्रेज़ सरकार ने अपने चाटुकारों द्वारा ही करवा दिया। यहाँ तक ही नहीं अपितु अल्फ्रेड पार्क में जिस जामुन के पेड़ के साथ सटकर उन्होंने अंग्रेज़ पुलिस का सामना किया था उसे भी कटवा दिया ताकि कही यह पेड़ भविष्य में 'स्मृति चिन्ह' न बन जाय। अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प, देश भक्ति से ओत–प्रोत भारत माता के इस वीरसपूत को हमारा शत–शत नमन।

thearyasamaj.org

आंतरिक खोखलेपन का प्रतीक है आडंबरपूर्ण व्यवहार

♦सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

एक टूटी–फूटी झोंपड़ी में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। दाने–दाने को मुहताज थी पर एक दिन उसको भी अंगूठी पहनने का शौक चढ़ आया। पाई–पाई जोड़कर किसी तरह एक सोने की अंगूठी बनवा ही डाली। बुढ़िया ने अंगूठी पहनी और सारे गांव का चक्कर लगा आई पर अफ़सोस कि उसकी अंगूठी पर किसी की भी नज़र न पड़ी। न तो किसी ने उससे अंगूठी के बारे में ही पूछा और न उसकी अंगूठी की तारीफ़ ही की। बुढ़िया बेचारी परेशान। इतनी मुश्किल से तो अंगूठी बनवाई थी उसने और किसी ने भी नहीं देखा। बुढ़िया ने अपनी झोंपड़ी में आग लगा दी।

लोग जब तक पानी लेकर आए तब तक झोंपड़ी राख में तबदील हो चुकी थी। लोगों ने पूछा कि अम्मा कुछ बचा भी कि सब कुछ जलकर स्वाहा हो गया। बुढ़िया ने उँगली आगे करते हुए कहा कि बेटा इस सोने की अंगूठी के सिवा कुछ भी तो नहीं बचा। अब सभी लोग आग की बात भूलकर अंगूठी के बारे में पूछने लगे। एक ने पूछा, ''अम्मा ये कब बनवाई ? ''अम्मा खलिस सोने की लगती है कितने में बनी ?'' एक और प्रश्न आया। बुढ़िया मन ही मन कह रही थी, ''अरे मुओ! ये सब पहले पूछ लेते तो मुझे झोंपड़ी क्यों जलानी पड़ती ?''

माना कि बुढ़िया अपनी अंगूठी का प्रदर्शन करने, उसके बहाने अपनी तारीफ सुनने को मरी जा रही थी लेकिन क्या हम सबके अंदर भी वैसी ही एक बुढ़िया मौजूद नहीं है ? हम सब में किसी न किसी रूप में स्वयं को दिखलाने या आत्म–प्रदर्शन की प्रवृत्ति मौजूद होती है लेकिन यह इतनी ज्यादा भी नहीं होनी चाहिए कि यह विकृत्ति लगने लगे। क्या कारण है इस छद्म व्यवहार का ? कहा गया है कि थोथा चना बाजे घना या फिर अधजल गगरी छलकत जाय। कुछ लोग ऐसे कपड़े पहनते हैं अथवा जीवनशैली अपनाते हैं जिससे दूसरे लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो सके। ऐसे लोग अपने कपड़ों व अन्य बाह्य साधनों द्वारा अपनी पहचान स्थापित करना चाहते हैं क्योंकि उनकी अन्य कोई पहचान होती ही नहीं।

जिन लोगों के व्यक्तित्व में खामियाँ होती हैं, जिनका व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होता जो अल्पज्ञ होते हैं या जिनकी बुरी आदतों अथवा दोषपूर्ण व्यवहार के कारण समाज में मान–प्रतिष्ठा नहीं होती वो लोग महँगे कपड़ों–जूतों अथवा अन्य बाह्य साधनों द्वारा अपने इस आंतरिक अभाव की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। इसका एक कारण और भी है और वो है हमारे जीवन में किसी न किसी मोड़ पर कुछ चीजों का घोर अभाव रहा होता है। उस अभाव को परोक्ष रूप से पूर्ण करने के लिए या उस अभाव की क्षतिपूर्ति करने के लिए भी हम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। यह प्रदर्शन सिद्ध करता है कि हमने जीवन में न केवल अर्थाभाव व अन्य चीजों की कमी झेली है अपितु दूसरे क्षेत्रों में भी कोरे हैं। हममें शिक्षा ही नहीं नैतिकता का भी नितांत अभाव है। हम धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति व कला से कोसों दूर हैं हमारा पहनावा व उसका प्रदर्शन हमारे परिवेश, हमारी परवरिश व शिक्षा–दीक्षा सभी की जानकारी देने में सक्षम होता है।

धर्म–अध्यात्म के क्षेत्र में भी आज कमोबेश यही स्थिति है। धर्म–अध्यात्म के नाम पर कुछ लोगों का पहनावा और उनकी चाल–ढाल विशिष्ट प्रकार की होती है। विशेष रंग का कुर्ता, धोती, दुपट्टा या अंगवस्त्रम्, विशेष प्रकार जूते या खड़ाऊँ, माथे पर तिलक, गले में मालाएँ, कमर में यज्ञोपवीत तथा हाथों की कलाइयों पर लपेटे देकर बाँधा गया कलावा अथवा एक खास अंदाज में तराशी गई दाढ़ी–मूंछे रखने वाले तथा बात–बात पर शास्त्रों के हवाले से अप्रासंगिक उदाहरण देने वाले ये लोग अपनी जीवनशैली व व्यवहार से आतंक उत्पन्न करते प्रतीत होते हैं। उनका बाह्य अथवा नाटकीय रूप सिद्ध करता है कि व्यक्ति धर्म–अध्यात्म के क्षेत्र में शून्य हैं। वास्तव में धर्म–अध्यात्म के नाम पर कर्मकांड व आडंबरपूर्ण क्रियाएँ हमारी आंतरिक शून्यता व पाखण्ड का ही प्रतीक हैं।

मंदिर–मस्जिद अथवा अन्य धर्मस्थलों के सामने से गुजरते हुए सर झुकाना लेकिन हर नियम को तोड़ना, हर जगह अनुशासनहीनता का प्रदर्शन करना, अशिष्ट भाषा का प्रयोग करना, हर बात पर निरर्थक बहस करना ये दर्शाता है कि हमारी पढ़ाई–लिखाई अथवा हमारे व्यक्तित्व में कुछ खामी अवश्य है। कुछ लोग तो धार्मिक पाखण्ड अथवा अन्य प्रपंच करते ही इसलिए हैं कि लोगों पर प्रभाव डालकर अपना उल्लू सीधा करते रहें। यह हमारे साहित्यिक, सांस्कृतिक अथवा आध्यात्मिक सतहीपन व कपटपूर्ण जीवन को बयान करता है। कुछ कलाकार किस्म के लोग कानों में बांलियाँ वगैरा पहनते हैं और उनकी देखादेखी एक छूत के रोग की तरह कुछ अन्य लोग भी। यह अवश्य ही किसी न किसी अभाव, रिक्तता अथवा मनोग्रंथि का सूचक है। कलाकार की पहचान उसकी

thearyasamaj.org

कला से होनी चाहिए न कि उसके वस्त्राभूषणों से।

भारत रत्न से सम्मानित प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जीवन बड़ा सादगीपूर्ण था। फटी हुई लुंगी पहने रियाज में लगे रहते थे। भारत रत्न मिल चुका था। मिलने–जुलने के लिए आने वालों का ताँता लगा रहता था इसी वेशभूषा में सबसे मिलते थे। एक दिन एक शिष्या ने टोकते हुए उनसे कहा, ''आपको भारत रत्न मिल चुका है। मिलने–जुलने के लिए आने वालों से फटी लुंगी पहने हुए मिलना क्या अच्छा लगता है ?'' खाँ साहब बोले, ''भारत रत्न हमें शहनाईवादन के लिए मिला है। न कि लूंगी के लिए। लुँगी का क्या है सिल जाएगी या नई आ जाएगी पर सुर फटा नहीं होना चाहिए।''

हमारी संस्कृति में सादा जीवन व उच्च विचार के सिद्धांत को उत्तम माना गया है। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब इसका प्रमाण थे।

एक कलाकार की पहचान उसकी कला से होनी चाहिए उसके महंगे वस्त्राभूषणों अथवा आकर्षक जीवनशैली से नहीं। कलाकार ही नहीं हर व्यक्ति की पहचान उसके कार्यों से होनी चाहिए। वस्त्राभूषणों अथवा जीवनशैली से नहीं, कर्म और कार्यशैली से ही हमारी पहचान बने। वास्तव में बाहरी साजो–सामान आंतरिक रिक्तता को प्रदर्शित करता है। यदि हम अपने आंतरिक विकास की ओर ध्यान देंगे तो इस बाहरी दिखावे की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। गरीबी और अभावों के बीच भी यह असंभव नहीं। ज्ञान की प्राप्ति के साथ–साथ अपने अंदर संतुष्टि व सादगी का विकास कर हम आडंबर रहित व सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

मृत्यु और जन्म

♦श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' मु.पो. मुरारई, जिला–वीरभूम (प.बंगाल)

मृत्यु के पश्चात् क्या होता है कोई नहीं जानता। चाहे वह पापी हो या धर्मात्मा उसका भी कोई पता नहीं कि क्या होता है। किन्तु यह सत्य है कि किसी भी–पदार्थ के नष्ट हो जाने से, जिससे उसका, निर्माण हुआ था उसके उपादान परमाणु का नाश नहीं होता।

यहाँ विचारणीय विषय यह है कि शरीरधारी प्राणी तो कोई जड़ पदार्थ नहीं है और जड़ पदार्थ तब तक नहीं है जब तक उसमें ज्ञातृत्व, कर्त्तव्य और भोक्तृत्व के गुण विद्यमान रहते हैं। अब विचार करना है कि सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, प्रेम, ममत्व, अनुभव, स्मरण तथा ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान को मस्तिष्क साधन से कौन करता है ? निश्चय ही कोई चेतना शक्ति है जो शरीर द्वारा भले बुरे कर्मों के अनुसार सुख–दुःखों को भोगता एवं अनुभव करता रहता है। इन व्यवहारों से सिद्ध हो जाता है कि चेतना सत्ता आत्मा जड़ पर परमाणुओं से भिन्न एक ऐसा अतिसूक्ष्म अमिश्रित द्रव्य अणु है। जिसमें ज्ञातृत्व का गुण बीज रूप से विद्यमान होता है। जब उसका शरीर क्षेत्र के अणुओं से सम्बन्ध होता है तब उस बीज रूपी आत्मा से वृक्षाकार रूपी उसके ज्ञातत्व आदि गुण प्रकट होने लगते हैं। तात्पर्य यह है कि आत्मा के सूक्ष्म शरीर से बने हुए स्थूल शरीर के सारे उपकरण जड़ हैं, यह सब तब प्रतीत होता है जब जीवन शक्ति ज्ञातत्व गुण वाला आत्मा इस देह से निकल जाता है तब उसके सारे साधन जड़ हो जाते हैं।

इस घटना से सिद्ध हो जाता है कि शरीर के केन्द्र में कोई ऐसी शक्ति थी जिसके रहने से शरीर पवित्र था और जब नहीं तब यह अपवित्र हो गया जड़ पदार्थ और शरीरधारी प्राणी में यही अन्तर है। जड़ में ज्ञान करने, कर्म करने और सुख दुःख अनुभव करने की शक्ति नहीं होती, पर मानव का मस्तिष्क दसों इन्द्रियों से युक्त होने से इस–'एष हि द्रष्टा स्पृष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्त्ता ज्ञानात्मापुरुषः।'' (प्रश्नोपनिषद्) आत्मा की उस साधना से सारे गुण प्रकट होने लगते हैं। परन्तु यह चेतना और ज्ञान प्रकृति का गुण नहीं है। प्रकृति तो उस आत्मा का साधनमात्र है। (जैसे कहीं जाना होता है तो) पैरों से चलकर जाया जाता है, पैर साधन हैं और जाने की प्रेरणा देने वाला उनसे अलग मैं हूँ। जैसे कुछ, बोलना होता है तो साधन कंठ और मुख में जो जिह्वा है उनके माध्यम से बोलता हूँ। और मस्तिष्क द्वारा अपना विचार प्रकट करता हूँ अतः यह 'मैं' एक विश्वव्यापी शब्द है। मैं के अर्थ दो हैं। एक यह मैं हूँ जो दिखता हूँ, पर एक और 'मैं' हूँ जो दिखता नहीं हूँ।

कुछ व्यक्तियों का विचार है कि इस शरीर में जो ऊर्जा है वही आत्मा है, परन्तु ऐसी बात नहीं है। चेतन और ऊर्जा दो भिन्न तत्त्व हैं। ऊर्जा प्राण की ही शक्ति है। प्राण जड़त्व है, जड़ तत्त्व से चेतन तत्त्व की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती। (आज जितने इलेक्ट्रिक यन्त्र–कम्प्यूटर, आदि का निर्माण हुआ है उनमें से किसी में भी चेतना का गुण नहीं है और न उन्हें सुख दुःख का अनुभव होता है।) उनमें जैसा फार्मूला लगाया गया है वे उसी प्रकार कार्य करते हैं। वे स्वयं नहीं बने हैं, उन्हें बनाने वाला किसी वैज्ञानिक का आत्मा ही है।

इस शरीर में ऊर्जा शक्ति तभी तक कार्य करती है जब

thearyasamaj.org

तक प्राण के साथ जीवात्मा का संयोग रहता है और जब शरीर रोग से अतिक्षीण हो जाता है, अथवा हृदय की गति बन्द हो जाती है तब आत्मा का शरीर से सम्बन्ध छूट जाता है और वह पुनः प्राणतत्त्व में मिल जाता है। उसका नाश नहीं होता। शरीर का नाश होता है। जैसे दीपक के बुझ जाने से वायु का, और मशीन के नष्ट हो जाने से बिजली का नाश नहीं होता वैसे ही शरीर के नष्ट हो जाने से उसके कर्त्ता आत्मा का नाश नहीं होता। वह अपनी सूक्ष्म शरीर की शक्तियों को समेट कर वायु से अतिसूक्ष्म प्राणतत्त्व में मिल जाता है। पुनः उसी के माध्यम से भाग्यशाली जीव माता के अण्डदानी में प्रवेश कर गर्भाथान का कार्य कारण बन जाता है। जब भ्रूण में आत्मा का संयोग हो जाता है तब कुछ समय बाद उसमें नाड़ी गति के अनुसार हरकत उत्पन्न होने लगती है। उस हरकत स्थान में उसका हृदय बनने लगता है। पश्चात् उसकी गति की तीव्रता से उसके सारे अंग बनने लगते हैं, और जब बन जाते हैं तब उस शिशु की हृदय की गति स्वाभाविक एक खास मात्रा के नियम में चलने लगती है। यह तमाम क्रिया–शिशु का पालन पोषण नौ मास नौ दिन तक गर्भ में प्राण के द्वारा ही होता है।

प्रश्नोपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि–'प्रजापतिश्चरसिगर्भे त्वमेवप्रतिजायसे तुभ्य प्राणः।'

व्याख्या–शरीरान्तर्भत गर्भ की स्थापना का कारण प्राण है। यदि रज और वीर्य के साथ प्राण न मिले तो गर्भ की स्थापना नहीं हो सकती। प्राण के ही कारण गर्भ की वृद्धि होती है और प्राण के ही आश्रय से बालक की उत्पत्ति होती है।

परमात्मा की बड़ी विचित्र रचना है। इधर शरीर को ऑक्सीजन न मिलने से वह जीतिव नहीं रह सकता। परन्तु उधर बिना श्वास–प्रश्वास के केवल सूक्ष्म शरीर के प्राण द्वारा गर्भ में माता से रसरक्त शिशु को नाभिनल द्वारा प्राप्त होता रहता है और विष्णु क्रिया की शक्ति से वह पलता रहता है।

आगे प्रश्नोपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि–'आत्मनः एष प्राणी जायते यथैषा पुरूषे छायैतस्मिन्नत दाततं।'

व्याख्या–प्राण सूक्ष्म शरीर का एक अंग है। सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा स्थूल शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है। इसलिए इस स्थूल शरीर में प्राण की उत्पत्ति का निमित्त आत्मा को बतलाया गया है। प्राण शरीर के देश विशेष में नहीं रहता किन्तु सारे शरीर में छायावत् फैला रहता है और एक बात यह है कि कोई भी अणु–परमाणु जीवात्मा नहीं है, न हो सकता है क्योंकि वह ऐसा एक अतिसूक्ष्म तत्त्व है जिसमें जानने, क्रिया करने आरै सुख–दुःख भोगने की शक्ति होती है। इसके अलावा जितने मृत शरीर के आत्मा हैं वे संस्कार के कारण एक जैसे नहीं होते। जैसे मनुष्यों के रूप और अंगूठे के निशान एक जैसे नहीं होते वैसे ही आत्मा भी संस्कार के कारण एक स्वभाव के नहीं होते। अतः हिंसक आदि संस्कार वासना में ही उन स्वच्छ आत्माओं को विभिन्न स्वभावों से आच्छादित किए रहते हैं। जब जन्म लेकर बालक कुछ बड़े हो जाते हैं तभी उनके जन्मगत गुणों का पता चलता है। प्राण के माध्यम से (मृत्यु के पश्चात्) जो जिस प्रकृति का रहता है उसे उसी योनि में जाने की व्यवस्था 'सत्यराजन' के न्याय व्यवस्था के अनुसार ही होती है।

जब शिशु का माता के गर्भ से जन्म लेने का समय आता है तो एक प्रकार दर्द उत्पन्न होता है और उस अत्यन्त वेदना को सहन करती हुई माता अपने बच्चों को जन्म दे देती है। (किन्तु आज कल की माताएं प्रसव पीड़ा सहन करने में असमर्थ होती हैं, इसलिये 'सीजर' पेट काटकर बच्चे को निकाला जाता है, और अनेक प्रकार के औषधियों के सेवन से 'माँ' के स्तन में पर्याप्त मात्रा में दूध शिशु को नहीं मिलता। किसी को तो दूध ही नहीं होता, बालक का ऊपरी दूध से पालन किया जाता है।)

जब शिशु का जन्म हो जाता है तब वह जब तक नहीं रोता, तब तक मूर्छितावस्था में रहता है, परन्तु नर्स या दाई के प्रयत्न से जब वह रोने लगता है तब श्वास लेने लगता है और दुःख टल जाता है। ऐसी घटना सब बच्चों में नहीं होती। किसी–किसी शिशु के दुर्बल या अन्य किसी कारण से हो जाता है।

जैसे शब्द का वाहक वायु होता है वैसे ही मृत्यु के बाद आत्मा का वाहक सूक्ष्म शरीर का प्राण होता है। जैसे एक का शब्द दूसरे के कान में प्रवेश करता है वैसे ही प्राण के ही माध्यम से आत्मा माता के भ्रूण में प्रवेश कर जाता है।

इस प्रकार जैसे सूर्योदय के पीछे अस्त का और अस्त के पीछे उदय का क्रम चल रहा है वैसे ही जन्म के पीछे मृत्यु का और मृत्यु के पीछे जन्म का होना सत्य सिद्ध हो रहा है।

उदाहरण के लिये–१–२ मास के शिशु से पता चलता है कि उसकी आत्मा किसी दूसरे शरीर से आई है क्योंकि उसने जो पूर्व में सुख–दुःख भोगा था वह इस जन्म में उसके रोने और हंसने जैसी हरकत करने से पता चलता है। अतः जब तक उसके मस्तिष्क के स्नायु कोमल रहते हैं तभी तक उसमें पूर्व के संस्कार भासित रहते हैं और जब उसके स्नायु सबल हो जाते हैं तब उसे पूर्वाभास नहीं होते।–वह अब इस जन्म के माता–पिता को ही अपना समझने लगता है।

thearyasamaj.org

एक प्रसंग

सुन्दरनगर के वनायक निवासी परम आदरणीय श्री गोबिन्द सिंह जी के बहनोई ८७ वर्षीय हिमा राम जी का कुछ दिन पूर्व निधन हो गया। वह मिलनसार तथा स्पष्ट वक्ता थे। एक दिन उनका सुपुत्र श्री लाल सिंह ठाकुर जो एक ख्याति प्राप्त वकील है उन्हें सुकेत चिकत्सालय में चैकअप कराने के लिए डॉ. सूद के पास ले गए। उचित परामर्श के उपरांत डॉ. साहिब ने उनसे पूछा जब मैं आपसे बातचीत कर रहा था तो आप उस समय मुस्कुराते हुए नजर क्यों आ रहे थे? इस पर ८७ वर्षीय श्री हिमा राम ने डॉ. सूद जी को कहा मैं चिकित्सालय बिल्कुल भी नहीं आना चाहता था क्योंकि जीवन की लम्बी अवधि में मैंने सुख–दुःख, धूप–छाया और बसंत–पतझड़ सब कुछ देख लिया है। यहाँ आने का मेरा अभिप्राय केवल और केवल मात्र अपने इस वकील बेटे की इच्छा पूर्ति करना था जो मुझे प्रतिदिन यही कहता रहता है कि डॉ. साहिब से अपने बीमारी के संबंध में सब कुछ क्यों नहीं बता देते। जबकि कार आपके यहां पर खड़ी है और यहीं पर वापिस ले आएगी। फिर आने–जाने में आनाकानी क्यों? मैंने डॉ. साहब को यह स्पष्ट बता दिया कि मैं अपने जीवन में आनन्दित हूँ। अब मुझे दवाईयाँ सेवन करने की अधिक आवश्यकता नहीं मैं तो केवल मात्र यह सोचकर प्रतिदिन मन ही मन प्रभु से सुखद मृत्यु की कामना करता हूँ। मैं तो यह सोचता रहता हूँ :–

जा मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द
मरने से ही पायो पूर्ण परमानन्द।

मेरे एक मित्र श्री अमर सिंह सेन मुझसे कहने लगे कि मृत्यु से सभी डरते हैं। अपने ही सम्बन्ध में इतना बड़ा विचार रखना हिमा राम जैसे व्यक्ति को ही शोभा देता है। मैंने उन्हें कहा ऐसा नहीं है हमारे जैसे सभी व्यक्तियों को अपने दिल और दिमाग में ही इसी प्रकार की सोच अपनानी चाहिए ताकि कोई भी कुविचार हमारे अंतिम समय में बाधक न हो सके और हम हंसते–हंसते प्राणों को प्रभु चरणों में अर्पित कर दे।

–श्री कृष्ण चन्द आर्य

वैदिक प्रवक्ताओं से विनती

♦श्री देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, नई दिल्ली–६४

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' या 'मनुर्भव' की प्रचार श्रृखला में अविद्या अज्ञानता के घोर अन्धकार को दूर करने के लिए खानपान को सुधारना अनिवार्य हैं। आज भौतिकवाद की चकाचौंध में मानवता का सत्यमार्ग अदृश्य (ढकता) होता जा रहा है, क्योंकि मनुष्य का खाना–पीना दूषित हो गया है। आप देख रह हैं कि मीट, मछली, अण्डों का बाजार गर्म है। सरेआम मार्केट में चिकन, तन्दूरी मुर्गे और कटे हुए बकरों की दुकानें खुली हुई हैं। देशी और अंग्रेजी शराब के ठेके खुले हुए हैं इस कारण सदाचार समाप्त होता जा रहा है। आश्चर्य और दुःख की बात है कि इन गन्दी हानिकारक चीजों का प्रयोग आर्य समाजी परिवारों में भी हो रहा है।

आर्य जगत् के उपदेशकों और वैदिक प्रवक्ताओं से विनती है कि जहाँ भी जाएं निर्भय और निर्लाभ होकर मांस और शराब के विरूद्ध जोरदार शब्दों में निन्दा करें। इनके सेवन से उत्पन्न होने वाले रोगों और दुष्परिणामों को बताते हुए तत्काल छोड़ने की प्रेरणा दें। शाकाहारी भोजन के लिए प्रेरित करें।

आज वातावरण दूषित होता जा रहा है। मानसिकता प्रदूषण को दूर करने के लिए खानपान को सुधारने की प्रथम आवश्यकता है। मैं तो कहता हूँ कि युद्धस्तर पर इस महामारी को रोकने का प्रचार होना चाहिए। मुझे क्या, तुझे क्या, यदि यह सुनकर चुप रहोगे तो याद रखो! इस विनाशकारी तूफान के संकट से आप भी नहीं बच सकते। यदि बचना चाहते हो तो इन बुराइयों को दूर करने के लिए संगठित होकर हर संभव प्रयास करना आरम्भ कर दो। यज्ञ की तरह यह भी एक श्रेष्ठ कार्य है जिसे करने में कोई शंका, भय और लज्जा नहीं होनी चाहिए। नेक काम को साहस और उत्साह से करते रहो। यदि जनता का खानपान सुधर गया तो विचार सुधर जाऐंगे और विचार सुधर गए तो व्यवहार सुधर जाएगा, फिर सदाचार बन जाएगा।

डाइटिंग

डाइटिंग के लिए सलाद खाने वाले लोग दूसरों को चॉकलेट, केक और फ्रैंच फ्राइज़ खाते देख अवश्य दुःखी होते हैं। लेकिन अब तब शोध से यह भी पता चला है कि डाइटिंग करने के लिये अधिक वसायुक्त भोजन छोड़ने पर दिमाग पर वही असर होता है, जो नशीली दवाओं के आदी व्यक्ति के दिमाग में नशीली दवा छोड़ने पर होता है। शोधकर्ता स्टेफनी फुलटन ने चूहों पर किए गए अध्ययन के आधार पर बताया कि जो लोग ज्यादा तेल, घी व चीनी वाला खाना खाते हैं, उनके मस्तिष्क की न्यूरो कैमिस्ट्री उन लोगों से अलग होती है, जो स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन खाते हैं। खानपान में अचानक बदलाव करने से अवसाद की संभावना होती है। इतना ही नहीं, इससे तनाव के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। कम वसा वाले भोजन में मौजूद वसा में मात्र ११ कैलरी होती है, वहीं ज्यादा तेल–घी वाले भोजन में मौजूद वसा में ५८ कैलरी होती है।

–सौजन्य : राष्ट्रदूत

thearyasamaj.org

अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

♦अर्जुनदेव चढ्डा प–२८, विज्ञाननगर, कोटा (राजस्थान)

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी–कभी ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहाँ २०१२ में भीलवाड़ा से इलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात् पूरा परिवार परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहाँ कुछ टोने–टोटके करने लगा। लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि उनको किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियाँ चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेक घटनाएँ, तथ्य, विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्कों से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाए जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी आदमी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोने–टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएँ, गंडे ताबीज, भूत–प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन–किन रूपों में लोगों के मन में घर किए हुए है।

कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा कभी नारियल को मंत्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नज़र आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल–फूल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नज़र आते हैं और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारीरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक परेशानियाँ व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तंत्र–मंत्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हूए लुटे–पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं। कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत–प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहाँ तक कि अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद, दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इन का कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा सांसरिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किन्तु इन ग्रन्थों के ज्ञान से अंजान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नए पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था के अनुरूप नए शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैठ जमा लेते हैं और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकते हुए दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सुंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तंत्र–मंत्र, जादू टोने–टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियाँ छुपी हुई हैं, न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख–तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज

thearyasamaj.org

कर निवारण करे। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करे। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र–मंत्र के नाम पर भोले–भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करें। क्योंकि वेद कहते हैं ''अंधन्तम प्रतिशन्ति ये अविद्याम् उपासते'' जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न कि तंत्र–मंत्र तथा पाखण्ड से।

स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराव भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढ़ोगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने तब और अब इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी समय कोटा कलेक्टर को फोन कर ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने देने का आग्रह किया।

व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आम जन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन–प्रशासन–पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया।

समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी के चच्योट खंड के प्रधान श्री रणजीत सिंह की अध्यक्षता में वैठक हुई जिसमें जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य मुख्यातिथि तथा पैंशनर कल्याण संघ के भीष्म पितामह श्री भक्त राम आजाद तथा समाजसेवी दयालु राम शास्त्री सहित ८० से अधिक सेवानिवृत कर्मचारी उपस्थित थे इनमें से मुख्य नाम इस प्रकार से हैं : सर्व श्री गयाहरू राम ठाकुर, मस्त राम, जै राम, नानक चन्द सोनी, जावकु राम, सदा नन्द, आलम चन्द, मंगत राम, चन्द्र मणी, खेम चन्द ठाकुर, कन्हैया लाल, नन्द लाल, डा. अमर नाथ, दयालु राम, मिलखी राम चन्देल, मोहन लाल, रणजीत सिंह, तुलसी राम, नन्ती देवी, द्रोमती देवी, जानकी देवी, गणेशु देवी, नोखी देवी, रमा देवी, बसाखु राम, नंद लाल, सेवक राम, रविन्द्र कुमार, कर्म सिंह, सूरत राम, संत राम, खेम चन्द, योगिन्द्र सोनी, नारदु राम, झावे राम, लालमन त्यागी, नजु राम, सरन दास, ठाकर दास, टेक चन्द, उदमीया राम इत्यादि शामिल थे। सेवानिवृत कर्मचारी वन्धु श्री रूलिया राम जी की तरफ से सभी को भोजन कराया गया। इस अवसर पर हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर नाथ शर्मा ने सभी बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए अधिकाधिक संख्या में सदस्यता कराने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एकता के सूत्र में बंध कर ही हम सरकार से अपनी समस्त न्यायोचित मांगों को मनवायेंगे। हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी के पूर्व महासचिव श्री भक्त राम आजाद ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि पैंशनरों की समस्याओं का शीघ्र –अतिशीघ्र समाधान करें अन्यथा पूर्व सरकार की तरह उन्हें भी कटु अनुभवों का सामना करना पड़ेगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में खंड प्रधान श्री रणजीत सिंह ने कहा कि चच्योट खंड के सभी पैंशनर आगामी चुनाव प्रक्रिया में बढ़चढ़ कर भाग लेकर अपनी एकता का प्रदर्शन करें।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी की बल्ह खंड की कार्यकारिणी की बैठक जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य की अध्यक्षता में हुई जिसमें जोगिन्द्रनगर, द्रंग, सुन्दरनगर, बल्ह, चच्योट, धर्मपुर, गोपालपुर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी वक्ताओं ने संघ की एकता को बनाए रखने पर बल दिया और सरकार से पैंशनरों की समस्याओं का तुरंत हल निकालने का अनुरोध किया। इस अवसर पर प्रदेश पैंशनर कल्याण संघ के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री अमर नाथ गौतम ने सरकार से अनुरोध किया कि वे अविलम्ब पैंशनरों की सभी समस्याओं का समाधान करें। उन्होंने ५, १० और १५ प्रतिशत भत्ते को मूल पैंशन में सम्मिलित करने का आग्रह किया और ५०० रूपये चिकित्सा भत्ता देने का अनुरोध किया। प्रदेश उपाध्यक्ष तथा नगर परिषद सुन्दरनगर की श्रीमती गिरिजा गौतम ने सभी पैंशनरों से एक सूत्र में बंधने का अनुरोध किया। इस अवसर पर पैंशनरों के सम्मान में श्री ललित कुमार, कोषाध्यक्ष बल्ह खंड, श्री महिन्द्र सिंह तथा बल्ह खंड प्रधान श्री मंगत राम चौधरी ने पैंशनरों की बैठने की सुव्यवस्था की। जिला प्रधान ने सभी खंडों के पधारे हुए सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपने–अपने खंडों का चुनाव अप्रैल तक करा लें ताकि मई मास में जिला मण्डी की पैंशनर कार्यकारिणी का गठन किया जा सके। श्री रमन चन्द गुप्ता, संयुक्त सचिव जिला मण्डी ने अपने ओजस्वी भाषण में पैंशनरों को मिलबैठ कर अपनी सभी समस्याओं का समाधान करने का आह्वान किया। द्रंग खंड के प्रधान श्री एम. सी. चौहान तथा जोगिन्द्र नगर खंड के वरिष्ठ नेता श्री शम्भु राम जसवाल ने भी अपने विचारों की अमृत वर्षा करते हुए संघ को सफल बनाने पर बल दिया।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के राष्ट्रीय एवं राज्य पुरस्कार बिजेता श्री शम्भू राम जसबाल के सुपौत्र ''वंश'' का मुंडन संस्कार दिनांक २६ जनवरी को बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पैंशनर कल्याण संघ की समस्त कार्यकारिणी एवं आर्य वन्दना परिवार की ओर से बहुत–बहुत बधाई।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

आर्य समाज का भविष्य

♦अश्विनी कुमार पाठक, सी, केशव पुरम, दिल्ली–३५

आर्य समाज एक प्रगतिशील संस्था है। इस का भूतकाल बड़ा शानदार रहा है। ऋर्षि दयानन्द ने इसे एक कालजयी संस्था के रूप में स्थापित किया था। इसका मुख्य लक्ष्य छठे नियम के अनुसार संसार का उपकार करना है अर्थात् शरीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना। आर्य समाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ मानता है जिसमें 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उपदेश दिया गया है अर्थात् संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ। इसलिये आर्य समाज का आन्दोलन हमेशा चलता रहना चाहिये।

महर्षि दयानन्द ने कहा था कि मैंने आर्य समाज को किसी नये मत अथवा पंथ के रूप में स्थापित नहीं किया। मेरा धर्म तो वेद के अनुसार सत्य सनातन वैदिक धर्म है जो ब्रह्म ऋषि से जैमिनी मुनि तक चलता आया है। इसी धर्म के प्रचार के लिये मैंने आर्य समाज बनाया है।

इसलिये आर्य समाज के नेताओं को वैदिक धर्म की दीक्षा देनी चाहिये तथा जनगणना तथा अन्य सब जगह अपना धर्म वैदिक ही लिखना–लिखाना चाहिये तथा अपना आचरण वैदिक सिद्धान्तानुकूल ही बनाना चाहिये। ऐसा करने से ही आर्य समाज जीवित रहेगा क्योंकि धर्म और मत तो हमेशा चलते रहते हैं। इसलिये वैदिक धर्म की स्थापना सब जगह होनी आवश्यक है।

आर्य समाज के समकालीन ब्रह्म समाज, देव समाज तथा प्रार्थना समाज काल का ग्रास बन चुके हैं। कहीं आर्य समाज का भी यही हाल न हो जाये इसलिये वैदिक धर्म की दीक्षा सब लोगों को देना आवश्यक है। इस समय आर्य समाज में कुछ ऐसे लोग घुस आये हैं जो पदों के लिये झगड़े कर रहे हैं और कोर्ट में मुकदमेबाजी तक कर रहे हैं जो अनुचित है। इनसे सावधान रहना चाहिये।

कुछ समय से आर्य समाज के प्रचार का कार्य ढीला पड़ गया है। मीडिया में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का नाम तक नहीं है। आर्य समाज का कोई टी. वी. चैनल नहीं है तथा न कोई दैनिक समाचार पत्र है। जबकि पाखंड और अन्ध विश्वास फैलाने वाले बहुत हैं।

श्री पूनम सूरी जो महात्मा आनन्द स्वामी के पौत्र हैं डी. ए. वी. तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने हैं। वह बड़े कर्मठ व्यक्ति हैं। उनसे आर्य जनता को बहुत आशायें हैं। वैदिक सिद्धांतों का प्रचार आवश्यक है। इस बारे में किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है कि लोग नाराज हो जायेंगे। हमारे पूर्वज आर्य नेताओं तथा संन्यासी विद्वानों ने अनेक कष्ट सहकर भी वेद का प्रचार किया था। इसलिये वेद प्रचार के लिये आर्य समाज का टी.वी. चैनल होना आवश्यक है। श्री पूनम सूरी जी को इस बारे गंभीरता से विचार करना चाहिये।

केवल बड़े–बड़े सम्मेलन करने से ही उन्नति नहीं होगी। दिल्ली में पिछले दिनों दो बड़े आर्य महासम्मेलन हो चुके हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने भी जनवरी महीने में तीन दिन का आर्य महासम्मेलन किया था। परन्तु इन सम्मेलनों के बाद क्या आर्य समाज की उन्नति हुई है कृपया विचार करें। पुराने सदस्य दिवंगत हो रहे हैं नये बन नहीं रहे इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा। साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति घटती जा रही है।

देश–उद्धार और समाज–सुधार आर्य समाज के बिना कौन करेगा ?इसलिये आर्य समाज को जागृत होकर कार्य करने की आवश्यकता है। सब आर्य जन अपने कर्तव्य को पहचानें यह मेरा नम्र निवेदन है। मैं आर्य समाज को उन्नति के शिखर पर देखना चाहता हूँ। मैं अपनी आयु के ६०वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हूँ।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं के चुनाव सम्बन्धी झगड़े तभी समाप्त होंगे अगर इन्हें ट्रस्ट की तरह चलाया जाये।

आर्यो उठो जागो, अपने कर्तव्य का पालन करो, तभी भविष्य उज्ज्वल होगा।

साभार

श्री चिन्त राम गुप्ता, निवासी गांव व डा. सलापड़, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

ॐ

करो देश का ध्यान

♦पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार,
ग्राम बहीन, जिला पलवल (हरि)

ऋषियों का यह देश है, आर्यवर्त महान।
भारत की थी विश्व में सबसे ऊँची शान।।
सबसे ऊँची शान, भारती थे उपकारी।
करती थी सम्मान, हमारा दुनियाँ सारी।।
वेदों को प्रचार, भारती तब करते थे।
सकल विश्व की पीर, भारती ही हरते थे।।
सबसे बड़ी विशेषता, ईश्वर के थे भक्त।
श्रेष्ठजनों को थे नरम, दुष्टों को थे सख्त।।
दुष्टों को थे सख्त, दया थी हर दिल अन्दर।
अन्दर से थे सही, ठीक जैसे थे बाहर।।
इसीलिए संसार, सक, करता था आदर।
आन–बान के धनी यहाँ थे सब नारी–नर।।
सुनो सभी नर–नारियो, आज काम की बात।
वेदों के पथ पर चलो, बंद करो उत्पात।।
बंद करो उत्पात, जगत् में करो भलाई।
करो धर्म के काम, मार्ग है यह सुख दाई।।
धीर–वीर बलवान बनो, 'मिल कदम बढ़ाओ।
राम कृष्ण की तरह, जगत् में आदर पाओ।।
आर्यजनों! अब है यही, सुनो हमारा धर्म।
सोच समझकर के करें, हम सब अच्छे कर्म।।
हम सब अच्छे कर्म, सभी कर्त्तव्य निभाएं।
जो हैं मानव श्रेष्ठ, उन्हीं को आगे लाएं।
करो देश का ध्यान, साथियो ! कदम बढ़ाओ।
आर्यवर्त्त को पुनः, जगत् का गुरू बनाओ।।

अमीर-गरीब

एक धनाढ्य व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाकर देव–प्रतिमा के समक्ष घी का दीपक जलाता और प्रभु से अपनी सुख–समृद्धि के लिए विनती करता। वह वर्षों से मंदिरों में घी का दीया जलाता आ रहा था। उसी गाँव का एक गरीब भी संध्या ढले इस मन्दिर में तेल का दीपक जलाया करता और प्राणीमात्र के कल्याण की प्रार्थना करता। बाद में वह उस दीपक को उठाकर अपने घर के सामने वाली अंधेरी गली के मोड़ पर रख आता। दीपक के सहारे उजाले में लोग बिना ठोकर खाए गली को सहजता से पार कर लेते थे।

दैवयोग से मंदिर में दीपक जलाने वाले सेठ और गरीब का एक ही दिन निधन हुआ। धर्मराज ने सेठ से ज्यादा निर्धन के पुण्य गिनाते हुए उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान देने का पार्षदों को आदेश दिया। धनाढ्य यह सुनकर भौंचक्का रह गया। वह बोला यह तो सरासर अन्याय और भेदभाव है। मैं प्रतिदिन घी का दीपक प्रभु को अर्पण करता था और यह कंगला तेल का दीया जलाता था। यह भला मुझसे अधिक पुण्यात्मा कैसे हो सकता है ?धर्मराज मुस्कुराए। बोले, ''तुम अपनी सुख–सुविधा और धन–धान्य की वृद्धि के लिए दीपक जलाते थे जबकि यह गरीब सबका हित साधने और आते–जाते लोगों को राह दिखाने के लिए अंधेरी गली में दीपक जलाकर रखता था।''

साभार : पंजाब केसरी

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शब्दार्थ : यह परमेश्वर का मुख्य निज नाम है, जिस नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं, जो प्राणों का भी प्राण, सब दुःखों से छुड़ाने हारा, स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सब सुख की प्राप्ति कराने हारा है, उस सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, कामना करने योग्य, सर्वत्र विजय कराने हारे परमात्मा का, जो अतिश्रेष्ठ, ग्रहण और ध्यान करने योग्य सब क्लेशों को भस्म करने हारा, पवित्र शुद्धस्वरूप है उसको हम लोग धारण करें, यह जो परमात्मा हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म, स्वभावों में प्रेरणा करे।